Padma Vibhushan

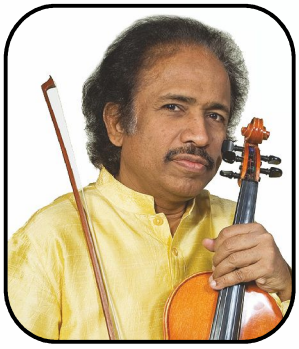

DR. LAKSHMINARAYANA SUBRAMANIAM

Dr. Lakshminarayana Subramaniam is a Global violin icon.

2. Born on 23rd July, 1947, Dr. Subramaniam began his performing career at the age of six and has since become the face of the Indian violin on the global scene. A maestro of the Carnatic classical tradition, he has also made significant contributions to Western classical music and is the creator of the global fusion concept, and did the first North South jugalbandi (with the legendary Ustad Ali Akbar Khan). He was the first artist to compose and arrange for, perform with and conduct major western orchestras. He has been instrumental in bringing the violin to the forefront of Indian classical music while simultaneously pushing musical boundaries worldwide, to fulfil the vision of his father and guru Prof. V. Lakshminarayana.

3. With his technical brilliance and innovative approach, Dr. Subramaniam became a cultural ambassador, representing Indian classical music on world stages like the Royal Albert Hall in London, Carnegie Hall and the Lincoln Center in New York, the Sydney Opera House, and the Bolshoi Theatre and the Tchaikovsky Hall. He was the first Indian musician to perform in several countries, including Japan, Madagascar and Iceland.

4. The groundbreaking performances of Dr. Subramaniam introduced global audiences to the depth and intricacy of Indian violin playing. Over his illustrious career, he has collaborated with legendary artists like Yehudi Menuhin, Stephane Grappelli, George Harrison, Stevie Wonder, Al Jarreau and Herbie Hancock, among others, further cementing his reputation as a global musical icon. He has also collaborated with Indian legends like Pt Ravi Shankar, Maestro Zubin Mehta, and Ustad Bismillah Khan. His compositions have been performed by renowned orchestras such as the New York Philharmonic, London Symphony Orchstra, London Philharmonic, the Swiss Romande Orchestra, and many others. He has also composed the music for films like Salaam Bombay, Mississippi Masala and others.

5. In addition to his contributions as a performer and composer, Dr. Subramaniam has made significant strides in music education and cultural promotion. He founded the Lakshminarayana Global Music Festival (LGMF), which brings together legendary musicians from around the world and has been organised in over 25 countries over the past three decades. He also established the Lakshminarayana Global Centre of Excellence (LGCE) for advanced musical training and the Subramaniam Academy of Performing Arts (SaPa) to nurture young musical talent.

6. Dr. Subramaniam's contributions have been recognized with numerous prestigious awards. He was given the Violin Chakravarthy title by the Governor of Madras in 1972. He has been hailed as the “GOD of Indian Violin” by the Times of India, and “The best this listener has heard” by the New York Times. He has been honoured with the Padma Shri and Padma Bhushan by the Government of India for his contributions to music. Additionally, he has received the Sangeet Natak Akademi Award and honorary doctorates from various institutions.

पद्म विभूषण

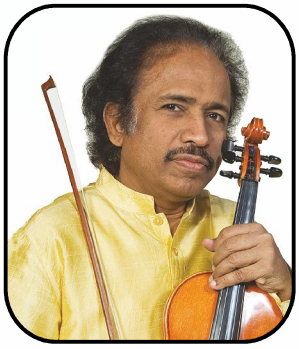

डॉ. लक्ष्मीनारायणा सुब्रमणियम

डॉ. लक्ष्मीनारायणा सुब्रमणियम वायलिन के वैश्विक आइकन हैं।

2. 23 जुलाई, 1947 को जन्मे, डॉ. सुब्रमणियम ने छह साल की उम्र में अपने कला प्रदर्शन करियर की शुरुआत की और तब से वैश्विक परिदृश्य पर भारतीय वायलिन का चेहरा बन गए हैं। कर्नाटिक शास्त्रीय परंपरा के एक उस्ताद के रूप में उन्होंने पश्चिमी शास्त्रीय संगीत में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने ग्लोबल फ्यूजन कॉन्सेप्ट की रचना की और पहली उत्तर दक्षिण जुगलबंदी (महान उस्ताद अली अकबर खान के साथ) की। वह प्रमुख पश्चिमी ऑर्केस्ट्रा के लिए संगीत रचना और उसकी व्यवस्था करने वाले, उनके साथ प्रदर्शन और उनका संचालन करने वाले पहले कलाकार थे। उन्होंने अपने पिता और गुरु प्रोफेसर वी. लक्ष्मीनारायण के सपने को पूरा करने के लिए भारतीय शास्त्रीय संगीत में वायलिन को अग्रणी स्थान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और साथ ही दुनिया भर में संगीत के दायरे को आगे बढाया है।

3. अपनी तकनीकी प्रतिभा और अभिनव दृष्टिकोण के साथ, डॉ. सुब्रमणियम लंदन में रॉयल अल्बर्ट हॉल, न्यूयॉर्क में कार्नेगी हॉल और लिंकन सेंटर, सिडनी ओपेरा हाउस और बोल्शोई थिएटर और त्चिकोवस्की हॉल जैसे वैश्विक मंचों पर भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रतिनिधित्व करते हुए एक सांस्कृतिक राजदूत बन गए। वह जापान, मेडागास्कर और आइसलैंड सहित कई देशों में प्रस्तुतियां देने वाले पहले भारतीय संगीतकार थे।

4. डॉ. सुब्रमणियम की अभूतपूर्व प्रस्तुतियों ने वैश्विक दर्शकों को भारतीय वायलिन वादन की गहराई और जटिलता से परिचित कराया। अपने शानदार करियर के दौरान, उन्होंने येहुदी मेनुहिन, स्टीफन ग्रेपेली, जॉर्ज हैरिसन, स्टीव वंडर, अल जरारू और हर्बी हैनकॉक जैसे दिग्गज कलाकारों के साथ काम किया है, जिससे वैश्विक संगीत आइकन के रूप में उनकी प्रतिष्ठा और मजबूत हुई है। उन्होंने पंडित रविशंकर, उस्ताद जुबिन मेहता और उस्ताद बिस्मिल्लाह खान जैसे भारतीय दिग्गजों के साथ भी काम किया है। उनकी संगीत रचनाओं को न्यूयॉर्क फिल्हारमोनिक, लंदन सिम्फनी ऑर्केस्ट्रा, लंदन फिल्हारमोनिक, स्विस रोमांडे ऑर्केस्ट्रा और कई अन्य प्रसिद्ध ऑर्केस्ट्रा द्वारा प्रदर्शित किया गया है। उन्होंने सलाम बॉम्बे, मिसिसिपी मसाला और अन्य फिल्मों में संगीत भी दिया है।

5. एक कलाकार और संगीतकार के रूप में अपने योगदान के अलावा, डॉ. सुब्रमणियम ने संगीत शिक्षा और सांस्कृतिक प्रचार में उल्लेखनीय योगदान दिया है। उन्होंने लक्ष्मीनारायण ग्लोबल म्यूजिक फेस्टिवल (एलजीएमएफ) की स्थापना की, जो दुनिया भर के दिग्गज संगीतकारों को एक साथ लाता है और पिछले तीन दशकों में 25 से अधिक देशों में इसका आयोजन किया गया है। उन्होंने उन्नत संगीत प्रशिक्षण के लिए लक्ष्मीनारायण ग्लोबल सेंटर ऑफ एक्सीलेंस (एलजीसीई) और युवा संगीत प्रतिभाओं को बढ़ावा देने के लिए सुब्रमणियम एकेडमी ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट्स (सापा) की भी स्थापना की।

6. डॉ. सुब्रमणियम के योगदान को कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सराहा गया है। उन्हें 1972 में मद्रास के राज्यपाल द्वारा वायलिन चक्रवर्ती की उपाधि दी गई। टाइम्स ऑफ इंडिया ने उन्हें "गॉड ऑफ इंडियन वायलिन" और न्यूयॉर्क टाइम्स ने "इस श्रोता द्वारा सुना गया सर्वश्रेष्ठ" की उपाधि दी है। संगीत में उनके योगदान के लिए भारत सरकार ने उन्हें पद्म श्री और पद्म भूषण से सम्मानित किया है। इसके अलावा, उन्हें संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार और विभिन्न संस्थानों से मानद डॉक्टरेट की उपाधि मिल चुकी है।